सम्पादक के नाम

ये मुल्क सौ साल से ज़्यादा अंग्रेज़ों का गुलाम रहा, गुलामी भी ऐसी-वैसी नहीं

अंग्रेज़ों ने मुल्क के संसाधन लूटे, संस्कृति का हरण किया, हमारी भाषाएं छीनीं। हमारी सभ्यता से जुड़ा जो कुछ भी था, वो सबकुछ लूट कर, खुरच कर, छील कर अपने साथ विलायत ले गए। हम पर अपनी भाषा,अपना पहनावा और अपनी सोच थोप कर गए।

हम उनकी लड़ाइयों का ईंधन बने। हमारी दौलत से लंदन जैसे शहर सजाए गए। हमारे संसाधनों पर मैनचेस्टर के उद्योग खड़े हुए। हमारा खून उनकी मिलों का ईंधन बना। हमारे खेत बंजर हो गए और हमारे जवान विश्व युद्धों की भेंट चढ़ गए। यहां जो रह गए वो ग़रीबी, भूख और अकाल की भेंट चढ़े। जो ज़िंदा रहे वो गोली, फांसी और सलीब की रौनक़ बने। उनके तख़्त, ताज, महल, दौलत, वैभव, म्यूज़ियम सब हमारी लूटी हुई संपत्ति हैं। लेकिन इस सबके बावजूद हमारे दिलों में अंग्रेज़ों के लिए वैसी नफरत नहीं है जैसी होनी चाहिए थी।

हमारी नफरत के केंद्र में आज़ादी के सिपाही हैं। हमें नेहरू, गांधी से नफरत है। हम अपने सैकड़ों स्वतंत्रता सेनानियों का नाम नहीं जानते। जिन्हें हम सिपाही मान रहे हैं उसकी वजह उनके योगदान से ज़्यादा उनकी जाति और धर्म हैं। हमारी नफरत के केंद्र में साम्राज्यवाद नहीं है। अंग्रेज़ समझदार थे। उन्हें हमारे दिलों में छिपे मज़हबी नफरत के ज़हर का राज़ मालूम था। वो दक्षिण एशिया में हिंदू के सामने मुसलमान और हिंदी के सामने उर्दू को खड़ा करके गए। वो हमारे बहुसंख्यकों को बताकर गए कि देखो जब भी ज़हन में नफरत उबाल मारे तो सामने अल्पसंख्यकों को खड़ा कर लेना। पाकिस्तान हमारे लिए और हम पाकिस्तान के लिए चांदमारी की दीवार हैं। इन दीवारों पर हम अपनी नफरत के असलहे और बम दागते हैं। हमारे शोषक और लुटेरे हमारे मित्र हैं। मित्र भी ऐसे कि उनकी लूट जारी है मगर हमें उसकी फिक्र नहीं। हमारे राष्ट्रवाद की बुनियाद आज़ादी का संघर्ष या साम्राज्यवाद से हमारी लड़ाई नहीं है। आज़ादी के दीवाने हमारे आदर्श नहीं हैं। आज हमारा राष्ट्रवाद मज़हबी नफरत की बुनियाद पर टिका है। हमारे राष्ट्रवाद का मतलब राष्ट्र निर्माण या साम्राज्यवाद के ख़िलाफ संघर्ष नहीं है। हमारा राष्ट्रवाद बस इतना सा है कि किस तरह इसकी कसौटी पर अल्पसंख्यकों की परीक्षा ली जाए। हमारा राष्ट्रवाद बस इतना है कि हम किस तरह इसके बहाने एक दूसरे को ज़लील कर लें।

ऐसी नफरत के चबूतरे पर खड़े राष्ट्र को यौमे आज़ादी की मुबारकबाद, इस दुआ के साथ कि हम एक दिन इस नींद से जाग जाएं। हम उस रोज़ आज़ाद होंगे जिस रोज़ हम अपने तमाम देशवासियों की तरफ से दिलों का मैल धोकर उन्हें बराबर मानेंगे। आज़ादी उस रोज़ नुमाया होगी जिस रोज़ हम अपने लोगों से नहीं, शोषण, लूट और साम्राज्यवाद से नफरत करेंगे। फिलहाल वो सुबह दूर है। आज़ादी की वो सुबह अभी नहीं आई।

- जैग़म मुस्तफ़ा

ब्राह्मण समाज ऐसे व्यक्ति को विधर्मी कहता है

1. **अ**टल बिहारी वाजपेयी गौमांस और भैंसा दोनों खाते थे। लखनऊ का टुंडा कबाब (भैंसे वाला) उनका पसंदीदा था।

ब्राह्मण समाज ऐसे व्यक्ति को विधर्मी कहता है और अगर उसका बस चले तो ऐसे व्यक्ति को जाति से बाहर करना तो छोड़िए उसकी हत्या भी कर सकता है। लेकिन अटल जी ब्राह्मण थे इसलिए वो गाय-भैंस कुछ भी खा सकते थे। उन पर इसके लिए कभी कोई आक्षेप नहीं लगा।

2. अटल जी को व्हिस्की बेहद पसंद थी।

अटल जी भंगेड़ी भी थे। उनके लिए उज्जैन से भांग आती थी।

ऐसे व्यक्ति को ब्राह्मण समाज नशेड़ी और पतित मानता है और यह समझता है कि वह विवेकहीन और संस्कारहीन व्यक्ति है।

लेकिन अटल जी क्योंकि ब्राह्मण थे इसलिए वो विवेकवान और संस्कारी राजनेता बने रहे।

3. अटल जी के अनुसार वो "अविवाहित जरूर थे, लेकिन कुंवारे नहीं थे"। यानी बिना विवाह के उन्हें स्त्री संसर्ग बनाये रखने में कोई दिक्कत नहीं थी। उन्होंने इस बात को साबित भी किया। वह राजकुमारी कौल के साथ आजीवन बिना विवाह के रहे। उन्होंने राजकुमारी कौल समेत उनके पति और उनकी बेटी को भी गोद ले लिया था। सुचितावादी ब्राह्मण ऐसी औरत को "रखैल" और ऐसे आदमी को "छिनरा" कहते हैं।

लेकिन अटल जी ब्राह्मण थे इसलिए उन्हें ऐसा कुछ भी नहीं कहा गया।

4. बलराज मधोक के अनुसार, अटल जी "पद्दू" यानी पंडित दीनदयाल उपाध्याय की हत्या में शामिल थे। उन्होंने अपनी आत्मकथा में इसके पक्ष में कई दलीलें दी हैं।

लेकिन ब्राह्मण समाज उन्हें ब्राह्मण का हत्यारा नहीं मानता है और उन्हें ब्रह्महत्या का पापी नहीं कहता है। सिर्फ इसलिए क्योंकि वो ब्राह्मण थे। संभवत: , एक ब्राह्मण के मरने के बाद दूसरे को भी कुर्बान करना ब्राह्मण समाज के लिए बड़ा नुकसान होता।

सोचिये , सुचितावादी ब्राह्मण समाज अटल बिहारी वाजपेयी के बारे में इतना सब कुछ जानते हुए भी आज उन्हें अपने समाज का सबसे महान नेता घोषित कर रहा है।

इससे क्या साबित होता है ?

इससे साबित होता है कि उनकी सुचिता , संस्कार और परंपरा की बातें सिर्फ ढोंग होती हैं। वो ये सब दिखावा सिर्फ खुद को श्रेष्ठ और दूसरों को हीन दिखाने के लिए करते हैं। अपनी जाति और विचारधारा के एजेंडे में फिट बैठने वाला बुरे से बुरा व्यक्ति (ब्राह्मण के मापदंड पर)भी उनके लिए महान होता है।

- साइबर नजर

मेरी उनसे एक बार की मुलाक़ात

निसन्देह वह अपने दल और समूह के बीच सर्वाधिक उदार और कम ज़हरीले मनुष्य थे, लेकिन अपनी इस छवि का लबादा न ओढ़ते तो प्रधानमंत्री न बन पाते। उन्हें विदित था कि दंगे कराने में वह आडवाणी का मुकाबला नहीं कर सकते , अत: उन्होंने मध्य मार्ग अपनाया, और आडवाणी के मुकाबले बढ़त ले ली ।

वह अब तक के सर्व श्रेष्ठ प्रधान मंत्री भी नहीं थे , जैसा कि कई लोग दावा करते हैं । लेकिन वह अब तक के दो प्रधान मंत्रियों से उत्तम थे । प्रथम पी वी नरसिंह राव, और दूसरे वर्तमान प्रधान मंत्री । शेष सभी प्रधान मंत्रियों से वह न केवल उन्नीस थे, बल्कि 18 या 17 भी थे । वह भीड़ के वक्ता थे, न कि सर्वश्रेष्ठ वक्ता । भीड़ भले उनके चुटकलों और डायलोगों पर तालियां पीटती थी, लेकिन बौद्धिकों को वह कभी भी नेहरू , जयप्रकाश , लोहिया , मधुलिमये , ज्योति बसु अथवा जॉर्ज़ फर्नांडिस की तरह संतुष्ट नहीं कर सकते थे।

कवि के रूप में वह एक तुक्कड़ से अधिक न थे। वह अन्य बड़े कवियों की नकल या पैरोडी भी करते थे । मसलन हरिवंशराय बच्चन की एक प्रसिद्ध कविता है - मिट्टी का तन , मस्ती का मन , क्षण भर जीवन मेरा परिचय । "इस पर अटल जी ने तुक जोड़ी - हिन्दू तन मन मेरा परिचय।" पर एक राजनेता के लिए इतना ही पर्याप्त है । साहित्य में गहरा पैठने पर वह राजनीति में फेल हो जाएगा ।

यद्यपि वह अध्येता नहीं थे , बल्कि अध्ययनशील भी नहीं थे । पर उन राजनेताओं जैसे अनपढ़ भी न थे , जो भारत की जनसंख्या 6 सौ करोड़ बता दें ।

मेरी उनसे एक बार की मुलाक़ात है । वह नेता प्रतिपक्ष थे, जब टिहरी बांध विरोधी आंदोलन के सिलसिले में मेरे पिता सुन्दर लाल बहुगुणा ने मुझे अपना दूत बना कर उनके पास भेजा । मेरे पिता का नाम सुनते ही उन्होंने पहले मुंह बिचकाया, और फिर मुंह फेर कर बोले - अरे भई , बहुगुणा जी की तो बड़ी कृपा है मुझ पर। फिर चल दिये । उनकी यह व्यंग्योक्ति इस कारण थी , के मेरे पिता ने उनके 13 दिन के प्रधान मंत्री कार्यकाल में उनकी अपील, अथवा आदेश पर अपना अनशन खत्म न किया । तब मैं समझा कि वह अव्वल दर्जे के खुंदकी भी थे । उनके दो बड़े योगदान हैं । प्रथम उन्होंने भारतीय विदेश नीति की पुरानी टेक न छोड़ी, किसी भी विदेशी दबाव के आगे न झुके , और दूसरे अर्थ व्यवस्था की ऐसी तैसी न की, जैसी आज हुई है। मैं उनके मरने पर उतना ही दुखी हूं , जितना उनके जीने पर था ।

- राजीव नयन बहुगुणा

यूपी के अधिकारियों ने कांवड़ियों पर बरसाए थे 14 लाख के फूल

जनज्वार विशेष। जो सरकार रोजगार मांगने पर लाठी देती है और गोलियां मारती है, बचपन में कुपोषण दूर करने वाले अन्न को भ्रष्टाचारियों के हवाले कर देती है, वही सरकार नौजवानों को धर्मांध बना मूर्खता बांटने में अव्वल साबित हो रही है, क्योंकि धर्म का अफीम सर्वाधिक नशा देता हैञ

गाय, गौरक्षा और कांवड़ में रमे उत्तर प्रदेश के साधु मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पूरे प्रदेश शासनाधिकारियों की प्राथमिकता में धर्मांधता घोल दी है। हालत यह है कि योगी के शासन काल में बच्चे भले अस्पताल में बिना आक्सीजन के मर जाएं, लड़कियां भले बालिका गृहों से कोठे पर पहुंच जाएं, लेकिन कांवड़ियों पर फूल वर्षा कार्यक्रम में कोई कोताही नहीं होगी। उत्तर प्रदेश सरकार ने खुद स्वीकार किया है उसके अधिकारियों ने हेलीकाप्टर से 2 दिन जो फूल बरसाए हैं, उसका खर्चा 14.31 लाख है। इसमें अभी फूल और अन्य खर्च नहीं जुड़ा है, यह सिर्फ दो दिनों के हेलीकाप्टर का किराया है।

इकोनॉमिक टाइम्स में अमन शर्मा की बाइलाइन छपी खबर के अनुसार, अखबार को फूल वर्षा के खर्चे की एक कॉपी हाथ लगी है, जिसमें उत्तर प्रदेश सरकार ने हेलीकॉप्टर के लिए 'एयर चार्टर सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड' को 7 से 9 अगस्त तक कावड़ियों पर फूल वर्षा के लिए जो हेलीकॉप्टर लिया गया है, उसके किराए के रूप में 14.31 लाख रुपया भुगतान किया है।

फूल वर्षा का काम पुलिस अधिकारियों ने किया है, जिसमें मेरठ और आसपास के जिले शामिल हैं। हेलीकॉप्टर किराए पर लेने की अनुमति गृह मंत्रालय द्वारा 5 अगस्त को एक पत्र जारी कर दी गयी है।

हेलीकॉप्टर में बैठ फूल वर्षा करते दिख रहे पुलिस अधिकारी का नाम प्रशांत कुमार है। प्रशांत मेरठ मंडल के आईजी हैं और वे मीडिया को बता चुके हैं कि फूल वर्षा करने की उनकी ड्यूटी सरकार ने लगाई थी।

बात यहीं नहीं रुकी। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के शामली जिले के जिलाधिकारी इंद्र विक्रम सिंह, पुलिस अधीक्षक दिनेश कुमार और अपर पुलिस अधीक्षक श्लोक कुमार तो मुख्यमंत्री की दिली इच्छा को भांपते हुए पूरे फौज—फाटे के साथ शामली के शिवमंदिर की महाआरती में शरीक हुए।

जब समाज में अंधविश्वास, पाखण्ड के खिलाफ आन्दोलन कमजोर होगा तो कावड़ियों के रूप में हुडदंगी तो देखने को मिलेंगे ही.....

मेरा जन्म फरीदाबाद, हरियाणा में हुआ है और यही मेरी कर्म भूमि है. आज से 25-30 साल पहले कावड़ियों का यहाँ की धरती पर नामों निशान भी नहीं था, परन्तु आज झुण्ड के झुण्ड कावड़ियों के भेष में गुंडे सड़क पर हुडदंग मचाते, कानून का मजाक उड़ाते मिलते हैं.... बड़ा सवाल यह कि आखिर कुछ सालों में इसकी बढ़ोतरी क्यों हुई..... तो थोडा पीछे झांकना होगा....

1-) आर्य समाज आन्दोलन के कमजोर होने के कारण समाज में अन्धविश्वास बढ़ा है. आर्य समाज ने इस देश की बहुत सी कुरीतियों, अंधविश्वासों के खिलाफ लड़ाई लड़ी और उन कुरीतियों के खात्मा करने की दिशा में अहम् भूमिका निभाई..... वक्त के साथ आर्य समाज कमजोर पड़ा या यूँ कहें कि आरएसएस ने आर्य समाज को कमजोर किया, आर्य समाज में घुसकर, इसे बर्बाद कर दिया।, जिससे पाखण्डवाद में बढ़ोतरी हुई है।

2.) आरएसएस समाज की हर बुराई, पाखण्ड की पोषक है. आरएसएस ने समाज में घुसकर अंधविश्वास को बढाया है, जिससे अंधविश्वास तो बढ़ा ही और जनता की तकलीफों में भी इजाफा हुआ है।

3.) Constitution of India, Fundamental Duties, Article zv-A (h) says - to develop the scientific temper, humanism and the spirit of inquiry and reform; (हम वैज्ञानिक विचारों, मानवता, सवाल करना और सुधारों को बढ़ावा देंगे).... परन्तु सरकारें खुद जो संविधान के बलबूत पर काबिज होती हैं और अंधविश्वासों को बढ़ावा देती हैं, कावड़ियों पर फूल बरसाकर, संविधान की मूल भावना को ठेस पहुंचाती हैं, इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है?

- शिव कुमार जोशी, एडवोकेट

संसद से आधा किलोमीटर की दूरी पर हिंदूवादियों ने जलाया संविधान

मनु स्मृति जिंदाबाद के नारे के साथ अंबेडकर को गालियां बकते हुए हिंदुवादियों ने संविधान को किया आग के हवाले, मगर इन संविधान विरोधियों के खिलाफ अब तक नहीं हुआ है कोई मुकदमा दर्ज, सोशल मीडिया पर हो रही है देशद्रोह का मुकदमा दर्ज करने की मांगञ

देश की बागडोर संभालते वक्त 'संविधान को सबसे पवित्र किताब' और खुद को 'आंबेडकर का शिष्य' घोषित करने वाले प्रधानमंत्री मोदी के राज में संविधान को खुलेआम जलाकर उसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल किया जा रहा है, मगर मोदी तो छोड़िये उनकी पार्टी के किसी अदने से नेता का बयान भी इसके विरोध में नहीं आता।

सोशल मीडिया पर हिंदुवादियों द्वारा संविधान जलाए जाने का वीडियो खूब वायरल हो रहा है। वीडियो में साफ—साफ देखा जा सकता है कि पहले इन लोगों ने कागज के कुछ पन्नों को जलाया फिर संविधान के पहले पेज को आग के हवाले कर दिया पूरी किताब को स्वाहा कर दिया।

दलित कार्यकर्ता और गुजरात के वडगाम से निर्दलीय विधायक जिग्नेश मेवानी ने मोदी सरकार पर सवाल उठाते हुए यह वीडियो शेयर किया है और ट्वीट किया है कि 'मनुस्मृति के बजाय संघी भाजपाई हमारे देश के संविधान को जला रहे हैं। @PMOIndia कुछ टिप्पणी करेंगे इस मामले में? या अपना चिर—परिचित मौन ही बनाए रखेंगे? जितना जितना फ़ासीवाद आगे बढ़ता जाएगा यह लोग बाबा साहब को और भी अपमानित करेंगे— यही इनका असली चरित्र है। मोदी जी कुछ तो शर्म करो।

हिंदूवादियों द्वारा संविधान जलाए जाने पर छात्र नेता कन्हैया कुमार ने #SaveConstitution हैश टैग के साथ ट्वीटर पर शेयर करते हुए लिखा है, 'संविधान जलाने वाले इन संघी लोगों को असल तकलीफ आरक्षण से नहीं है, इन्हें तकलीफ इस बात से है कि संविधान अमीर-गरीब, दलित-ब्राह्मण, महिला-पुरुष, हिन्दू-मुसलमान सबको बराबर अधिकार देता है, इसीलिए ये अम्बेडकर मुर्दाबाद के साथ मनुस्मृति ज़िंदाबाद के नारे भी लगाते हैं।'

इन युवा नेताओं के अलावा संविधान जलाए जाने पर सोशल मीडिया पर हिंदुवादियों का खूब विरोध किया जा रहा है। 'मास्टर स्ट्रोक' के चलते भाजपा के निशाने पर आए पत्रकार पुण्य प्रसून बाजपेयी ने इस वीडियो को शेयर करते हुए ट्वीट किया है, 'जंतर मंतर पर मनुवादियों ने बाबा साहेब को गाली देते हुए भारत का संविधान जला दिया, और दिल्ली पुलिस मूकदर्शक बनी रही।'

- जनज्वार